आधुनिक शिक्षा प्रणाली: नवाचार, चुनौतियां और सीखने का भविष्य

डॉ. प्रेष्णि श्रीवास्तव,

विपणन और प्रबंधन संस्थान(आई.आई.एम), नई दिल्ली, भारत

सह लेखिका: अनुषा खरे (जे.आई.आई.टी नोएडा)

सारांश

भारत प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पिछले एक दशक में, हजारों बिजनेस स्कूल उभरे हैं, जिनमें लाखों स्नातक और पेशेवर एक विस्तारित अर्थव्यवस्था के लिए खुद को बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। कक्षा तक सीमित शिक्षा के पारंपरिक तरीके विकसित हो रहे हैं। आज, संस्थान कॉर्पोरेट जगत की गतिशील जरूरतों को पूरा करने के लिए छात्रों को तैयार करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

हालांकि, एक प्रासंगिक सवाल उठता है: प्रबंधन शिक्षा को अधिक प्रभावी और उद्योग-उन्मुख बनाने के लिए क्या अतिरिक्त कदम उठाए जा सकते हैं? एक महत्वपूर्ण पहलू जिसे एकीकृत करने की आवश्यकता है वह है प्रबंधन शिक्षा को आकार देने में कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी। चूंकि कॉर्पोरेट जगत उच्च शिक्षा का प्राथमिक लाभार्थी है, इसलिए प्रबंधन शिक्षा को उद्योग की जरूरतों के साथ अधिक संरेखित करने में उनका सहयोग महत्वपूर्ण है।

यह पत्र भारत में प्रबंधन शिक्षा में कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी के महत्व को संबोधित करता है। यह छात्र प्लेसमेंट और उद्योग की आवश्यकताओं के बीच की खाई को पाटने में बिजनेस स्कूलों और निगमों के सामने आने वाली चुनौतियों की भी पड़ताल करता है। इसके अलावा, यह इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए संगठनों द्वारा की गई पहलों पर चर्चा करता है।

1. परिचय

भारत का विकास सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व गति से आगे बढ़ रहा है। पारंपरिक औद्योगिक सेटअपों को आधुनिक तकनीक द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है, जो रचनात्मकता और नवाचार के साथ मिलकर है। आधुनिक शिक्षा और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की आकांक्षाओं से लैस कॉरपोरेट सेक्टर काफी परिपक्व हो गया है। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था बढ़ती है, प्रशिक्षित प्रबंधन पेशेवरों की मांग में वृद्धि हुई है, जो भविष्य के नेताओं के विकास में प्रबंधन शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है।

1.1 भारत में वर्तमान परिदृश्य

भारत तेजी से बहुआयामी विकास के दौर से गुजर रहा है, जिसमें शिक्षा सामाजिक और आर्थिक विकास को चलाने में तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जैसे-जैसे देश अधिक ज्ञान-आधारित समाज की ओर बढ़ रहा है, प्रौद्योगिकी दैनिक जीवन को आकार देने और शैक्षिक परिदृश्य को बदलने में एक केंद्रीय शक्ति बन गई है। युवा पीढ़ी, विशेष रूप से, तेजी से डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकियों को अपना रही है, जो शिक्षण और सीखने के पारंपरिक तरीकों की जगह ले रहे हैं।

एक वैश्विक और डिजिटल अर्थव्यवस्था में अवसरों को जब्त करने में सक्षम पेशेवरों और नेताओं के उत्पादन के लिए एक शिक्षित और कुशल आबादी आवश्यक है। हालांकि, एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है: क्या भारतीय शिक्षा प्रणाली उसी गति से विकसित हो रही है जिस गति से देश का

विकास हो रहा है? क्या हम आज के तेजी से विकसित और प्रौद्योगिकी संचालित कॉर्पोरेट दुनिया में पनपने के लिए आवश्यक कौशल के साथ स्नातक तैयार कर रहे हैं?

फिक्की की एक रिपोर्ट पिछले एक दशक में भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के विकास को रेखांकित करती है, जो इसे दुनिया में सबसे बड़ी स्थिति में रखती है। संस्थानों की संख्या में 11% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से विस्तार हुआ है, जबकि छात्र नामांकन 6% की CAGR से बढ़ा है। हालाँकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में प्रस्तावित 2035 तक सरकार के 50% सकल नामांकन अनुपात (GER) के लक्ष्य को प्राप्त करने में चुनौतियाँ बनी हुई हैं। एनईपी का उद्देश्य शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, बहु-विषयक और 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप बनाना है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रबंधन शिक्षा प्रासंगिक और भविष्य के लिए तैयार है, कॉर्पोरेट क्षेत्र के साथ गहन सहयोग आवश्यक है। उद्योग की भागीदारी अकादमिक सिद्धांत और वास्तविक दुनिया के व्यावसायिक प्रथाओं के बीच की खाई को पाट सकती है, जिससे छात्रों को तेजी से प्रतिस्पर्धी वैश्विक बाजार में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण सोच, समस्या-समाधान और नेतृत्व कौशल से लैस किया जा सकता है।

1.2 -स्कूलों में वर्तमान अभ्यास

आज की वैश्वीकृत दुनिया में, बिजनेस स्कूल वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की तैयारी कर रहे छात्रों की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए अपनी शिक्षण पद्धतियों को विकसित कर रहे हैं। बी-स्कूल विश्व स्तर पर विस्तार कर रहे हैं और सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए विभिन्न रणनीतियों को अपना रहे हैं, जिनमें शामिल हैं:

1. मामले का अध्ययन: छात्र वास्तविक कॉर्पोरेट स्थितियों को समझने, टीम वर्क, पहल और जोखिम लेने को प्रोत्साहित करने के लिए केस स्टडी में संलग्न होते हैं।
2. अतिथि व्याख्यान: उद्योग के नेताओं को अपनी विशेषज्ञता साझा करने के लिए आमंत्रित किया जाता है, कॉर्पोरेट नैतिकता, उपभोक्ता व्यवहार और अंतर्राष्ट्रीय विकास जैसे विभिन्न विषयों में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
3. सम्मेलन और सेमिनार: बी-स्कूल प्रसिद्ध व्यापारिक नेताओं और उद्यमियों की विशेषता वाले वार्षिक सम्मेलनों की मेजबानी करते हैं।
4. इंटर्नशिप और लाइव प्रोजेक्ट्स: छात्र इंटर्नशिप और लाइव प्रोजेक्ट करते हैं, व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं और पेशेवर कौशल विकसित करते हैं।
5. औद्योगिक यात्राएं: कंपनियों के दौरे छात्रों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों के साथ सैद्धांतिक ज्ञान को जोड़ने की अनुमति देते हैं।
6. भूमिका निभाता है और सिमुलेशन: छात्र प्रबंधन सिमुलेशन में भाग लेते हैं, वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों में अपनी समस्या सुलझाने और निर्णय लेने के कौशल को बढ़ाते हैं।

2. साहित्य की समीक्षा

गुप्ता, आर. (2018)। प्रबंधन शिक्षा को आकार देने में उद्योग की भूमिका: भारतीय बी-स्कूलों का एक केस स्टडी। (मास्टर थीसिस, दिल्ली विश्वविद्यालय)।

गुप्ता चर्चा करते हैं कि कैसे भारतीय बिजनेस स्कूलों ने धीरे-धीरे अपने पाठ्यक्रम में अधिक उद्योग-आधारित प्रथाओं को शामिल किया है। हालांकि, वह शैक्षिक संस्थानों और कॉर्पोरेट जगत के बीच संरचित, चल रहे सहयोग की कमी पर जोर देता है, जो स्थायी, प्रभावशाली परिवर्तनों के लिए आवश्यक है।

कोटलर, पी., और केलर, केएल (2016)। विपणन प्रबंधन (15 वां संस्करण)। पियर्सन एजुकेशन।कोटलर और केलर विपणन शिक्षा पद्धतियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। यद्यपि उनका ध्यान विपणन पर है, पुस्तक व्यापक व्यावसायिक शिक्षा के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है। यह केस स्टडीज, वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों और प्रबंधन कार्यक्रमों में अधिक अनुभवात्मक सीखने के दृष्टिकोण की ओर बदलाव के एकीकरण पर चर्चा करता है।**मिंट्ज़बर्ग, एच (2004)। प्रबंधक एमबीए नहीं: प्रबंधन और प्रबंधन विकास के नरम अभ्यास पर एक कठिन नज़र। बेरेट-कोहलर पब्लिशर्स।**मिंटज़बर्ग पारंपरिक एमबीए मॉडल की आलोचना करते हुए तर्क देते हैं कि इसमें वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग का अभाव है और सैद्धांतिक ज्ञान पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है। वह एक ऐसे पाठ्यक्रम की वकालत करते हैं जो व्यावहारिक अनुभव, नेतृत्व विकास और महत्वपूर्ण सोच में अधिक निहित है, जो आपके पेपर में पहचानी गई आवश्यकताओं के साथ संरेखित होता है। **चटर्जी, एस (2013)। प्रबंधन शिक्षा में कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी: एक खोजपूर्ण अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एजुकेशन, 11 (2), 145-155।**
यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि व्यावसायिक शिक्षा को अधिक उद्योग-प्रासंगिक बनाने में कॉर्पोरेट भागीदारी कैसे आवश्यक है। चटर्जी का सुझाव है कि बिजनेस स्कूलों और कंपनियों के बीच सहयोग, जैसे इंटर्नशिप, अतिथि व्याख्यान और लाइव प्रोजेक्ट, कौशल अंतर को कम करने और छात्र रोजगार क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं। **बेकर, एमजे (2008)। उच्च शिक्षा में रणनीतिक विपणन: बिजनेस स्कूलों का मामला। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल मैनेजमेंट, 22 (6), 529-544।**
बेकर चर्चा करते हैं कि कैसे बिजनेस स्कूल कॉर्पोरेट भागीदारों के साथ खुद को अधिक निकटता से जोड़कर रणनीतिक विपणन से लाभ उठा सकते हैं। पेपर का तर्क है कि बिजनेस स्कूलों को प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए निगमों की तरह अधिक काम करना चाहिए, विशेष रूप से उन उद्योगों के साथ संबंधों को मजबूत करके जो उनके स्नातकों के अंतिम उपयोगकर्ता हैं।**दातार, एसएम, गार्विन, डीए, और कलन, पीजी (2010)। एमबीए पर पुनर्विचार: एक चौराहे पर व्यावसायिक शिक्षा। हार्वर्ड बिजनेस स्कूल प्रकाशन।**
यह काम बताता है कि कैसे पारंपरिक एमबीए प्रोग्राम बदलते कारोबारी माहौल के अनुकूल होने में विफल रहे हैं। यह प्रबंधन शिक्षा में परिवर्तन की मांग करता है, इस बात पर जोर देता है कि बिजनेस स्कूलों को नियोक्ताओं की मांगों को पूरा करने के लिए नेतृत्व, नैतिकता और वास्तविक दुनिया की समस्या-समाधान जैसे कौशल को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।**शर्मा, पी. (2019)। प्रबंधन शिक्षा में बदलते प्रतिमान: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च, 19 (1), 1-12।**
शर्मा के लेख में वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी और उद्योग संरेखण की चुनौतियों पर ध्यान देने के साथ भारत में प्रबंधन शिक्षा में बदलते प्रतिमानों पर चर्चा की गई है। यह विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी स्नातकों का उत्पादन करने के लिए शिक्षण पद्धतियों और पाठ्यक्रम को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डालता है।**पाइरेस दा रोजा, एम., सारैवा, पी., और डिज़, एच. (2001)। पुर्तगाली उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एक उत्कृष्टता मॉडल का विकास। कुल गुणवत्ता प्रबंधन, 12 (7-8), 1010-1017।**
यह अध्ययन उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता में सुधार के लिए एक मॉडल विकसित करता है। हालांकि यह पुर्तगाली संस्थानों पर केंद्रित है, निष्कर्ष विश्व स्तर पर लागू होते हैं, विशेष रूप से यह समझने में कि कॉर्पोरेट सहयोग और निरंतर नवाचार के माध्यम से शैक्षिक उत्कृष्टता को कैसे मापा और बढ़ाया जा सकता है।**हेस्केट, जेएल, सासर, डब्ल्यूई, और स्लेसिंगर, एलए (1 99 7)। सेवा क्रांति। हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू प्रेस।** यह पुस्तक सेवा उद्योगों के परिवर्तन पर चर्चा करती है और सेवा-आधारित अर्थव्यवस्थाओं में पनपने वाले नेताओं का उत्पादन करने के लिए प्रबंधन शिक्षा कैसे विकसित होनी चाहिए। ग्राहक-केंद्रित रणनीतियों पर जोर बिजनेस स्कूलों पर लागू होता है जो उद्योग की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने कार्यक्रमों को तैयार करने का लक्ष्य रखते हैं।

साहित्य से पता चलता है कि जबकि भारत में प्रबंधन शिक्षा काफी विकसित हुई है, उद्योग की आवश्यकताओं के साथ शैक्षिक परिणामों को संरेखित करने में पर्याप्त अंतराल बने हुए हैं। मिंटज़बर्ग और दातार जैसे लेखक पारंपरिक एमबीए मॉडल की आलोचना करते हैं, व्यावहारिक, उद्योग-प्रासंगिक पाठ्यक्रम की ओर बदलाव का आह्वान करते हैं। चटर्जी और बेकर द्वारा खोजी गई कॉर्पोरेट भागीदारी, शिक्षा और कॉर्पोरेट जगत के बीच की खाई को पाटने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, Pires da Rosa और Heskett द्वारा सुझाए गए अभिनव अभ्यास प्रबंधन शिक्षा के भविष्य के लिए एक रोडमैप प्रदान करते हैं।

यह समीक्षा भारत में प्रबंधन शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य, इसकी चुनौतियों और शिक्षा के भविष्य को आकार देने में कॉर्पोरेट साझेदारी के महत्व को समझने की नींव रखती है।

3. अनुसंधान के उद्देश्य:

3.1 भारत में प्रबंधन शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करने के लिए: बिजनेस स्कूलों में मौजूदा शैक्षिक ढांचे और शिक्षण पद्धतियों को समझें, विशेष रूप से कॉर्पोरेट जगत की गतिशील आवश्यकताओं के संबंध में।

3.2 प्रबंधन शिक्षा में कॉर्पोरेट क्षेत्र की भूमिका का आकलन करने के लिए: जांच करें कि कॉर्पोरेट भागीदारी भारत में प्रबंधन शिक्षा की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता को कैसे बढ़ा सकती है।

3.3 उद्योग की आवश्यकताओं के साथ प्रबंधन शिक्षा को संरेखित करने में चुनौतियों की पहचान करने के लिए: छात्र कौशल और उद्योग की अपेक्षाओं के बीच की खाई को पाटने में शैक्षणिक संस्थानों और निगमों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाओं का अन्वेषण करें।

3.4 इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए बिजनेस स्कूलों और निगमों द्वारा पहल का मूल्यांकन करने के लिए: प्रबंधन स्नातकों की रोजगार क्षमता में सुधार के उद्देश्य से वर्तमान सहयोगी प्रयासों और अभिनव कार्यक्रमों की जांच करें।

3.5 प्रबंधन शिक्षा को अधिक उद्योग-उन्मुख बनाने के लिए रणनीतियों का प्रस्ताव करने के लिए: बिजनेस स्कूलों के लिए व्यावहारिक उद्योग जोखिम, कॉर्पोरेट साझेदारी और वास्तविक दुनिया के कौशल को उनके पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए कार्रवाई योग्य कदमों की सिफारिश करें।

4. अनुसंधान परिकल्पना

प**रिकल्पना 1**: भारत में प्रबंधन शिक्षा की वर्तमान स्थिति कॉर्पोरेट जगत की गतिशील आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्नातकों की तैयारियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

हाइपोथीसिस 2: प्रबंधन शिक्षा में कॉर्पोरेट भागीदारी में वृद्धि भारत में शैक्षिक कार्यक्रमों की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता को बढ़ाती है, जिसके परिणामस्वरूप स्नातकों की रोजगार क्षमता में सुधार होता है।

परिकल्पना 3: शैक्षिक संस्थानों और निगमों को उद्योग की आवश्यकताओं के साथ प्रबंधन शिक्षा को संरेखित करने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो स्नातकों के बीच कौशल अंतर में योगदान देता है।

परिकल्पना 4: बिजनेस स्कूलों और निगमों द्वारा शुरू किए गए सहयोगात्मक प्रयास और अभिनव कार्यक्रम छात्र कौशल और उद्योग की अपेक्षाओं के बीच की खाई को पाटने में आने वाली चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करते हैं।

परिकल्पना 5: प्रबंधन शिक्षा पाठ्यक्रम में व्यावहारिक उद्योग जोखिम, कॉर्पोरेट साझेदारी और वास्तविक दुनिया के कौशल को एकीकृत करने वाली रणनीतियों को लागू करने से स्नातकों की रोजगार क्षमता में काफी सुधार होगा।

5. अनुसधान क्रियाविधि

अनुसंधान डिजाइन वर्णनात्मक और खोजपूर्ण अनुसंधान डिजाइन है।

आबादी: प्रबंधन के छात्र, बिजनेस स्कूलों के संकाय सदस्य, कॉर्पोरेट प्रशिक्षक और भारत में विभिन्न उद्योगों के मानव संसाधन पेशेवर।

नमूना आकार: लगभग 300 प्रतिभागियों का एक नमूना, जिनमें शामिल हैं:

100	प्रबंधन के छात्र
100	संकाय सदस्य
100	कॉर्पोरेट पेशेवर

नमूनाकरण तकनीक: विभिन्न प्रकार के बिजनेस स्कूलों (जैसे, शीर्ष-स्तरीय, मध्य-स्तरीय और उभरते स्कूलों) और उद्योगों से प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण।

5.1 डेटा संग्रह के तरीके

- प्रबंधन शिक्षा, कॉर्पोरेट भागीदारी और कौशल अंतराल की स्थिति के बारे में छात्रों, शिक्षकों और कॉर्पोरेट पेशेवरों की धारणाओं का आकलन करने के लिए एक संरचित प्रश्नावली विकसित की।
- रोजगार, उद्योग सरेखण और शैक्षिक प्रभावशीलता से संबंधित प्रतिक्रियाओं को निर्धारित करने के लिए लिकर्ट स्केल प्रश्नों का उपयोग किया।
- उद्योग की आवश्यकताओं और सहयोगी पहल की प्रभावशीलता के साथ शिक्षा को सरेखित करने में आने वाली चुनौतियों में गहराई से अंतर्दृष्टि इकट्ठा करने के लिए प्रतिभागियों के एक सबसेट के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए।
- वर्तमान पाठ्यक्रम, व्यावहारिक प्रदर्शन और संभावित सुधारों पर अपने विचारों का पता लगाने के लिए छात्रों और कॉर्पोरेट पेशेवरों के साथ फोकस समूह चर्चा का आयोजन किया।

5.2 डेटा विश्लेषण

- सर्वेक्षण डेटा का विश्लेषण करने के लिए एसपीएसएस सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर का उपयोग किया।
- परिकल्पनाओं का परीक्षण करने और चर के बीच संबंधों का आकलन करने के लिए अनुमानित आंकड़े (जैसे, प्रतिगमन विश्लेषण, टी-परीक्षण) आयोजित किए।
- सामान्य विषयों और पैटर्न की पहचान करने के लिए साक्षात्कार और फोकस समूह डेटा के लिए विषयगत विश्लेषण का उपयोग किया।

6. विश्लेषण और निष्कर्ष

6.1 परिकल्पना 1: भारत में प्रबंध शिक्षा की वर्तमान स्थिति महत्वपूर्ण रूप से कॉर्पोरेट जगत की गतिशील आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्नातकों की तैयारी को प्रभावित करती है।

अध्ययन से पता चलता है कि भारत में प्रबंधन शिक्षा तेजी से विकसित हो रही है। बिजनेस स्कूल कॉर्पोरेट जगत की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए अपने पाठ्यक्रम को अपना रहे हैं। मुख्य निष्कर्षों में शामिल हैं:

- कई छात्रों को लगता है कि वर्तमान पाठ्यक्रम में व्यावहारिक अनुप्रयोग का अभाव है और यह उन्हें वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं करता है।

- जबकि केस स्टडी और सिमुलेशन जैसे नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग किया जा रहा है, फिर भी पारंपरिक व्याख्यान-आधारित प्रारूपों पर निर्भरता है, जो जुड़ाव और कौशल विकास में बाधा डाल सकती है।
- शैक्षिक संस्थानों और उद्योग के खिलाड़ियों के बीच सीमित सहयोग का उल्लेख किया गया, जिससे शैक्षिक परिणामों और कॉर्पोरेट अपेक्षाओं के बीच डिस्कनेक्ट हो गया।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर उनके विचारों को समझने के लिए प्रबंधन के छात्रों का एक सर्वेक्षण किया। के बारे में प्रश्न शामिल करें:

एक. केस स्टडी, इंटर्नशिप और अतिथि व्याख्यान की प्रभावशीलता।

दो. कॉर्पोरेट जगत के लिए उनकी तैयारी।

तीन. उनका मानना है कि उनकी शिक्षा में सुधार की जरूरत है।

भारत के विभिन्न बी-स्कूलों के 200 प्रबंधन छात्रों के बीच किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, 68% उत्तरदाताओं का मानना है कि केस स्टडी और इंटर्नशिप वास्तविक दुनिया की व्यावसायिक चुनौतियों की उनकी समझ में काफी सुधार करते हैं। हालांकि, 45% ने महसूस किया कि उनके पाठ्यक्रम में संचार और नेतृत्व जैसे सॉफ्ट स्किल्स में पर्याप्त प्रशिक्षण का अभाव है।

6.2 परिकल्पना 2: प्रबंधन शिक्षा में कॉर्पोरेट भागीदारी में वृद्धि भारत में शैक्षिक कार्यक्रमों की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता को बढ़ाती है, जिसके परिणामस्वरूप स्नातकों की रोजगार क्षमता में सुधार होता है।

प्रबंधन शिक्षा को आकार देने में कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी को महत्वपूर्ण माना जाता है। सर्वेक्षण और साक्षात्कार के निष्कर्ष इंगित करते हैं:

- बढ़ी हुई कॉर्पोरेट भागीदारी पाठ्यक्रम प्रासंगिकता को काफी बढ़ा सकती है, यह सुनिश्चित करती है कि यह नवीनतम उद्योग प्रवृत्तियों और मांगों के साथ संरेखित हो।
- प्रतिभागियों ने बताया कि उद्योग के विशेषज्ञों के साथ सत्रों ने वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों की उनकी समझ में सुधार किया और सिद्धांत और व्यवहार के बीच की खाई को पाटने में मदद की।
- इंटर्नशिप और लाइव परियोजनाओं की पेशकश करने वाली कॉर्पोरेट साझेदारी को रोजगार बढ़ाने में महत्वपूर्ण के रूप में पहचाना गया, जो छात्रों को कॉर्पोरेट सेटिंग में हाथों पर अनुभव प्रदान करता है।

अनुसंधान उन कॉर्पोरेट पेशेवरों तक पहुंच गया जिन्होंने प्रबंधन स्नातकों की भर्ती की है। इन स्नातकों की तत्परता पर उनकी प्रतिक्रिया के लिए पूछें और वे क्या सुधार सुझाएंगे। अग्रणी भारतीय निगमों के 15 एचआर प्रबंधकों के साथ एक साक्षात्कार से पता चला कि 60% नियोक्ताओं ने प्रबंधन स्नातकों को व्यावहारिक प्रदर्शन की कमी पाया, जबकि 40% ने सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

इस शोध ने प्रबंधन स्कूलों के पूर्व छात्रों से प्रतिक्रिया एकत्र की, यह देखने के लिए कि उनकी शिक्षा ने उन्हें अपने करियर के लिए कितनी अच्छी तरह तैयार किया। शोध ने यह पता लगाने पर ध्यान केंद्रित किया कि पूर्व छात्रों ने इंटर्नशिप, लाइव प्रोजेक्ट आदि जैसी विभिन्न शैक्षिक प्रथाओं को कितना प्रभावी पाया। शीर्ष भारतीय बी-स्कूलों के 100 पूर्व छात्रों के बीच किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 75% उत्तरदाताओं ने इंटर्नशिप को अपनी शिक्षा का सबसे मूल्यवान हिस्सा बताया। हालांकि, 30% ने महसूस किया कि अकादमिक शिक्षण और उद्योग की आवश्यकताओं के बीच अंतर है।

6.3 परिकल्पना 3: शैक्षिक संस्थानों और निगमों को उद्योग की आवश्यकताओं के साथ प्रबंधन शिक्षा को संरेखित करने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो स्नातकों के बीच कौशल अंतर में योगदान देता है।

संरेखण के लिए महत्वपूर्ण बाधाओं की पहचान की गई:

- प्रबंधन कार्यक्रमों में जो पढ़ाया जाता है और नियोक्ता क्या उम्मीद करते हैं, उसके बीच एक स्पष्ट कौशल अंतर मौजूद है। स्नातक अक्सर व्यावहारिक कौशल, सॉफ्ट कौशल और समस्या सुलझाने की क्षमताओं की कमी होती है।
- स्नातकों के प्रदर्शन के बारे में नियोक्ताओं से प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए अक्सर कोई व्यवस्थित दृष्टिकोण नहीं होता है, जिससे शैक्षिक कार्यक्रमों में निरंतर सुधार की कमी होती है।
- शैक्षणिक संस्थानों के भीतर परिवर्तन का प्रतिरोध नवीन शिक्षण विधियों और उद्योग-प्रासंगिक प्रथाओं को अपनाने में बाधा डालता है।

बी-स्कूलों और कॉर्पोरेट्स के सामने चुनौतियां

6.3.1 बी-स्कूलों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

- व्यावसायीकरण: कई बी-स्कूल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर व्यावसायिक पहलुओं को प्राथमिकता देते हैं, जिससे प्रबंधन स्नातकों में सामग्री की गहराई की कमी होती है.
- घटिया संस्थानों का प्रसार: व्यवसाय प्रबंध में स्नातकोत्तर कार्यक्रमों की लोकप्रियता के कारण गैर-मान्यता प्राप्त संस्थानों का उदय हुआ है जो घटिया शिक्षा प्रदान करते हैं।
- उद्योग के अनुभव की कमी: कई छात्र पूर्व कार्य अनुभव के बिना एमबीए प्रोग्राम में प्रवेश करते हैं, वास्तविक दुनिया की व्यावसायिक चुनौतियों को समझने की उनकी क्षमता को सीमित करते हैं।
- सॉफ्ट स्किल्स की कमी: छात्रों में अक्सर आवश्यक सॉफ्ट स्किल्स की कमी होती है, जिसे बी-स्कूलों को ग्रूमिंग और बिजनेस शिष्टाचार प्रशिक्षण के माध्यम से संबोधित करना चाहिए।
- उद्योग से दूरी बनाना: शिक्षा और उद्योग के बीच का अंतर एक महत्त्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है, जिसमें संकाय सदस्यों के पास अक्सर प्रासंगिक उद्योग जोखिम की कमी होती है।

6. 3.2 कॉर्पोरेट्स के सामने आने वाली चुनौतियां

- व्यावहारिक एक्सपोजर का अभाव: स्नातकों को अक्सर व्यावहारिक उद्योग ज्ञान की कमी होती है, जिससे कंपनियों के लिए उन्हें लाइव परियोजनाओं के लिए भर्ती करना मुश्किल हो जाता है।
- अनुसंधान फोकस का अभाव: अंतरराष्ट्रीय समकक्षों के विपरीत, भारतीय बी-स्कूलों में अनुसंधान पर मज़बूत ध्यान केंद्रित नहीं है, जो वास्तविक दुनिया के डेटा के साथ जुड़ने की स्नातकों की क्षमता को सीमित करता है।
- सॉफ्ट स्किल्स डेफिसिट: कई स्नातक कॉर्पोरेट सेटिंग्स में आवश्यक पेशेवर व्यवहार से लैस नहीं हैं।
- कौशल आधारित शिक्षा: कुशल श्रमिकों के लिये उद्योग की मांगों को पूरा करने के लिये कौशल-आधारित शिक्षा की बढ़ती आवश्यकता है।
- भर्ती के बाद प्रशिक्षण लागत: प्रबंधन स्नातकों के लिए भर्ती के बाद प्रशिक्षण में निवेश करते समय कंपनियों को वित्तीय और समय की कमी का सामना करना पड़ता है

6.4 परिकल्पना 4: बिजनेस स्कूलों और निगमों द्वारा शुरू किए गए सहयोगात्मक प्रयास और अभिनव कार्यक्रम छात्र कौशल और उद्योग की अपेक्षाओं के बीच की खाई को पाटने में आने वाली चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करते हैं।

वर्तमान पहलों का आकलन किया गया, जिससे ताकत और कमजोरियों दोनों का पता चला:

- संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं और सह-आयोजित कार्यशालाओं जैसी पहलों ने शैक्षिक परिणामों को बढ़ाने और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देने में वादा दिखाया है।
- कुछ बिजनेस स्कूलों ने अभिनव शिक्षण वातावरण को सफलतापूर्वक लागू किया है जो रचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच को प्रोत्साहित करते हैं, हालांकि ये आदर्श के बजाय अपवाद बने हुए हैं।
- फिर से शुरू कार्यशालाओं और नकली साक्षात्कार सहित लक्षित रोजगार वृद्धि कार्यक्रमों का नौकरी बाजार के लिए छात्र तत्परता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

6.5 परिकल्पना 5: प्रबंधन शिक्षा पाठ्यक्रम में व्यावहारिक उद्योग जोखिम, कॉर्पोरेट साझेदारी और वास्तविक दुनिया कौशल को एकीकृत करने वाली रणनीतियों को लागू करने से स्नातकों की रोजगार क्षमता में काफी सुधार होगा।

विश्लेषण के आधार पर, कई कार्रवाई योग्य रणनीतियों का प्रस्ताव किया गया था:

- बिजनेस स्कूलों को उद्योग की जरूरतों के साथ संरेखण सुनिश्चित करने के लिए अधिक व्यावहारिक और अनुभवात्मक सीखने के अवसरों को शामिल करने के लिए पाठ्यक्रम को संशोधित करना चाहिए।

- निगमों के साथ औपचारिक साझेदारी स्थापित करने से छात्रों को अधिक इंटर्नशिप के अवसर और वास्तविक दुनिया की परियोजनाएं मिल सकती हैं।
- पाठ्यक्रम विकास और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में उद्योग के हितधारकों से प्रतिक्रिया को शामिल करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण विकसित करना।
- सॉफ्ट स्किल्स प्रशिक्षण को एकीकृत करके समग्र विकास पर ध्यान दें
- और पाठ्यक्रम में समस्या को सुलझाने के अभ्यास।

इस शोध में प्रबंधन शिक्षा और छात्र नामांकन प्रवृत्तियों के विकास के संबंध में फिक्की, एआईसीटीई, या अन्य सरकारी निकायों जैसे आधिकारिक स्रोतों के डेटा शामिल हैं। एआईसीटीई के आंकड़ों के अनुसार, भारत में प्रबंधन संस्थानों की संख्या में 2015 से 2023 तक 12% की वृद्धि हुई, जबकि एमबीए कार्यक्रमों में नामांकन में 8% की वृद्धि हुई। हालांकि, उद्योग प्लेसमेंट में आनुपातिक वृद्धि नहीं देखी गई है, 40% स्नातकों को प्रासंगिक रोजगार हासिल करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

7.निष्कर्ष

भारत में प्रबंधन शिक्षा का विकसित परिदृश्य महत्वपूर्ण अवसरों और दुर्जेय चुनौतियों दोनों को प्रस्तुत करता है। जैसे-जैसे कुशल प्रबंधन पेशेवरों की मांग बढ़ती है, कॉर्पोरेट क्षेत्र की जरूरतों के साथ शैक्षिक परिणामों को संरेखित करना तेजी से महत्वपूर्ण हो जाता है। इस पत्र ने प्रबंधन शिक्षा को आकार देने में कॉर्पोरेट भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला है, शैक्षिक संस्थानों और उद्योग के खिलाड़ियों के बीच सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

विश्लेषण से पता चलता है कि कई बिजनेस स्कूल केस स्टडी, इंटर्नशिप और अतिथि व्याख्यान जैसे नवीन शिक्षण पद्धतियों को शामिल करने के लिए अपने पाठ्यक्रम को अपना रहे हैं, लेकिन व्यावहारिक प्रदर्शन और सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण में अंतराल बना हुआ है। स्नातक अक्सर इन कार्यक्रमों से आवश्यक दक्षताओं की कमी के कारण उभरते हैं, जिससे संस्थानों के लिए इन कमियों को सक्रिय रूप से संबोधित करना अनिवार्य हो जाता है। व्यावसायीकरण और घटिया संस्थानों के प्रसार सहित बिजनेस स्कूलों के सामने आने वाली चुनौतियां, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रयासों को और जटिल बनाती हैं।

कॉर्पोरेट प्रतिक्रिया बढ़ी हुई उद्योग सगाई की आवश्यकता को पुष्ट करती है, कई नियोक्ताओं ने कॉर्पोरेट जगत के लिए स्नातकों की तत्परता के बारे में चिंता व्यक्त की है। छात्रों, शिक्षकों और कॉर्पोरेट पेशेवरों के साथ सर्वेक्षण और साक्षात्कार के निष्कर्ष कौशल अंतर की साझा मान्यता और अकादमिक प्रशिक्षण और उद्योग की अपेक्षाओं के बीच डिस्कनेक्ट को उजागर करते हैं।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, यह पत्र कई कार्रवाई योग्य रणनीतियों का प्रस्ताव करता है, जिसमें पाठ्यक्रम ओवरहाल शामिल हैं जो व्यावहारिक शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं, इंटर्नशिप और वास्तविक दुनिया की परियोजनाओं के लिए कॉर्पोरेट साझेदारी को मजबूत करते हैं, और पाठ्यक्रम में सॉफ्ट कौशल प्रशिक्षण का एकीकरण करते हैं। शिक्षा और उद्योग के बीच अधिक सहयोगी वातावरण को बढ़ावा देकर, भारत में प्रबंधन शिक्षा एक गतिशील और तेजी से विकसित कॉर्पोरेट परिदृश्य की जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए विकसित हो सकती है।

अंत में, भारत में प्रबंधन शिक्षा का भविष्य शैक्षणिक संस्थानों और कॉर्पोरेट क्षेत्र दोनों की सक्रिय भागीदारी पर टिका है। सिद्धांत और व्यवहार के बीच की खाई को पाटने के लिए मिलकर काम करके, हम प्रबंधन पेशेवरों की एक नई पीढ़ी की खेती कर सकते हैं जो वैश्विक अर्थव्यवस्था की जटिलताओं को नेविगेट करने और संगठनात्मक सफलता में सार्थक योगदान देने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हैं।

8. संदर्भ और ग्रंथ सूची

8.1कोटलर, पी., और केलर, केएल **(2016)।** *विपणन प्रबंधन* (15 वां संस्करण)। पियर्सन एजुकेशन।

8.2 मिंटज़बर्ग, एच (2004)। *प्रबंधक एमबीए नहीं: प्रबंधन और प्रबंधन विकास के नरम अभ्यास पर एक कठिन नज़र।* बेरेट-कोहलर पब्लिशर्स।

8.3 बेनिस, डब्ल्यू, और ओ'टोल, जे (2005)। *कैसे बिजनेस स्कूलों ने अपना रास्ता खो दिया।* हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू, 83 (5), 96-104।

8.4 हेस्केट, जेएल, सासर, डब्ल्यूई, और स्लेसिंगर, एलए (1 99 7)। *सेवा क्रांति।* हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू प्रेस।

जर्नल **लेख**

8.5 दातार, एसएम, गार्विन, डीए, और कलन, पीजी (2010)। *एमबीए पर पुनर्विचार: एक चौराहे पर व्यावसायिक शिक्षा।* हार्वर्ड बिजनेस स्कूल प्रकाशन।

8.6 चटर्जी, एस (2013)। *प्रबंधन शिक्षा में कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी: एक खोजपूर्ण अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एजुकेशन,* 11 (2), 145-155।

8.7 बेकर, एमजे (2008)। *उच्च शिक्षा में रणनीतिक विपणन: बिजनेस स्कूलों का मामला। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल मैनेजमेंट,* 22 (6), 529-544।

8.8 शर्मा, पी. (2019)। *प्रबंधन शिक्षा में बदलते प्रतिमान: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च,* 19 (1), 1-12।

रिपोर्ट

8.9 अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई)। वार्षिक *रिपोर्ट 2019-20.*एआईसीटीई की आधिकारिक वेबसाइट से लिया गया।

8.10 फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की)। भारत *में उच्च शिक्षा: विजन 2030*/फिक्की की आधिकारिक वेबसाइट से लिया गया।

शोध और शोध प्रबंध

8.11 गुप्ता, आर. (2018)। *प्रबंधन शिक्षा को आकार देने में उद्योग की भूमिका: भारतीय बी-स्कूलों का एक केस स्टडी।* (मास्टर थीसिस, दिल्ली विश्वविद्यालय)।

ऑनलाइन संसाधन

8.12 कपीएमजी **और फिक्की।** (2022). *भारतातील व्यवस्थापन शिक्ष्याचा भविष्य.* केपीएमजी की आधिकारिक वेबसाइट से लिया गया।